रमेश मनोहरा

दोहे पर्यावरण पर

दोहे पर्यावरण पर

पर्यावरण का यारों, मिलकर करें उद्धार,
प्रदूषित दिखे जहां पर, करें आप उपचार,
हरियाली यदि देखना, पौधे खूब लगाएं,
इस धरती को फिर सदा, हरा-भरा ही पाएं,
पेड़ रहें गहरे यहां, खूब होय बरसात,
फिर तो जल संकट से मिले, हम सभी को निजात,
मौसम दूषित मुक्त हो, लें खुल करके सांस,
कूड़ा करकट साफ हो, ऐसा करें प्रयास,
हरे-भरे पहाड़ रहें, रहे नदी आबाद,
तब होगा नहीं यारों, कोई यहां विवाद,
बंजर होती ये धरा, काटोगे यदि पेड़
फिर पानी के लिए यहां, होगी जी मुठभेड़,
हरी-भरी धरती रहे, दें आप योगदान,
पर्यावरण की यारों, तभी बढ़ेगी शान,
चहके डाल पर चिड़ियां, वन में नाचे मोर,
पेड़ हों इतने गहरे, कलवर का हो शोर,
पर्यावरण होवे ना, रमेश कभी खराब,
आप सब मिलकर लाओ, इसमें नया शबाब,
हरजन अपने घरों में, एक-एक पेड़ लगाए,
पर्यावरण को यारों, फिर हरा-भरा पाएं,
असभ्य हैं वे लोग जो, उगाते हैं खजूर,
पछताते हैं फिर यहां, रहे छांव से दूर

पानी को माने वरदान

नदियां खाली हो गई, दिखे वहां पर रेत,
रह गये प्यासे सारे, बिन पानी सब खेत,
जल प्रदूषण करके आप, लाते हैं सब रोग,
इसी बात को अब यहां, कब समझेंगे लोग,
जल बचाने का यारों, हरदम करें प्रयास,
तरसेंगे न पानी को, रखिये यह विश्वास,
देखो पानी का हुआ, कैसा रमेश हाल,
त्राही त्राही हो रही, मच रहा है बवाल,
पानी के लिए हुआ है, आदमी मोहताज,
सूख गये कुएं और नदी, परेशान हैं आज
जितना भी प्रयास करें, बेकार न अब जाए,
पानी बचाने का ही, करें हरदम उपाए,
किल्लत पानी की मची, देखो चारों ओर,,
प्यासे सारे रह गये, आदमी और ढ़ोर,
जल बचाने का यारों, घर-घर दे संदेश
फिर रहे नहीं कभी भी, किसी को भी क्लेश,
मचे नहीं जल संकट से, रमेश हा-हाकार,
लगाकर पेड़ करें जी, धरती का श्रृंगार,
पानी से ही बनी है, इस जीवन की शान,
इसलिए आप सब इसे, मानें जी वरदान

घर-घर हरियाली

पेड़ कटने से हुए हैं, खाली जंगल आज,
तब वे पहन न सकेंगे, हरियाली का ताज,
सूखा ही सूखा दिखे, देखिए चारों ओर,
ऐसे जंगल में भला, नाचे कैसे मोर,
बचाकर रखें धन तभी, आवे जब संताप,
पेड़ भी हैं धन सबके, रखें बचाकर आप,
बरसेगा पानी तभी, पौधे खूब लगाएं,
फिर आप सब पानी से, अच्छी राहत पांए,
पेड़ हमारे मीत हैं, करें नहीं नुक्सान,
राही तो बैठा रहे, छांवों में श्रीमान,
छल कपट रखते नहीं, और ना रखें दांव,
रखें हैं व्यवहार सम, इनका है स्वभाव,
पौधा मानव हर एक, मन से यार लगाय,
पूरा जंगल सच में, हरा भरा हो जाय,
सच कहते हैं पेड़ ही, जीवन की पहचान,
इसको काटे हम कटे, होगा जी नुक्सान,
रखो बचाकर पेड़ को, इसमें जीवन धार,
ये ही नौका जीव की, यही है पतवार,
वृक्षों से करें दोस्ती, वृक्ष है बहुत महान,
इसके बिना जीना भी, लगे मृतक समान,
हर जन यदि यह ठान ले, पेड़ लगावे एक,
हरियाली से धरा भी, पाए श्रृंगार अनेक

संपर्क करें
रमेश मनोहरा
शीतला गली, जावरा
जिला रतलाम
(म.प्र.) 457226
मो.नं. 9479662215